

# नानाटि बढुकु

रागम्: रेवति ताळम्: आदि

(श्री अन्नमाचार्य विरचित)

पल्लवि

नानाटि बढुकु नाटकम्  
कानक कन्नदि कैवल्यम्

चरणम्

पुट्टय निजम् पोवुटय निजम्

नटनडिमि पनि नाटकम्

येट्टु नेदुट गलदि प्रपञ्चम्  
कट्टकडपटिदि कैवल्यम् ॥ १ ॥

तेगदु पापम् तीरदु पुण्यम्

नगी नगी कालम् नाटकम्

येगुवने श्री वेङ्कटेश्वरुडेलिक  
गगनम् मीदिदि कैवल्यम् ॥ २ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇